निबन्धात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

चढ़कर मेरे जीवन-रथ पर *लौटा लो यह अपनी थाती प्र*

लय चल रहा अपने पथ पर। *मेरी करुणा हा-हा खाती*

मैंने निज दुर्बल पद-बल पर, *विश्व! न सँभलेगी यह मुझसे*

उससे हारी-होड़ लगाई। *इससे मन की लाज गँवाई।*

उत्तर— सन्दर्भ- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'देवसेना का गीत' शीर्षक कविता से ली गई हैं जो जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नाटक 'स्कन्दगुप्त' से उद्रत हैं। इस गीत को हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग-- देवसेना निराश है। प्रेम के क्षेत्र में हरी हुई प्रेमिका है। अपनी जीवनभर की पूँजी को गँवाने के पश्चात् वह पश्चात्ताप करती है । अतृप्त प्रेम के कारण उसे अपना जीवन सुना प्रतीत होता है। वह इन्हीं भावों को इस अंश में व्यक्त करती है।

व्याख्या-- देवसेना जीवन-पर्यन्त संघर्ष करने के कारण निराश हो गई है। इसलिए वह कहती है कि मेरे जीवन में प्रलय का साम्रज्य हो गया है अर्थात् मेरा जीवन तूफानों से घिरने के कारण हताश हो गया है। मेरे जीवन की सुन्दर आकांक्षाएँ समाप्त हो गई हैं। मैं अपने दुर्बल पैरों पर खड़ी होकर प्रलय (जीवन झंझा) से व्यर्थ ही होड़ कर रही हूँ क्योंकि उसमें मेरी हार होना ही सुनिश्चित है। अन्त में निराश होकर वह विश्व से कहती है कि इस धरोहर (प्रेम) को लौटा लो। मुझमें इस थाती को सँभाल कर रखने की ताकत नहीं है। स्कन्दगुप्त के प्रेम में डूबकर मैंने अपनी लाज भी गँवा दी है। अब मुझसे यह वेदना सहन नहीं होती।

2. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

चौधरी साहब एक खासे हिन्दुस्तानी रईस थे। वसंत पंचमी, होली इत्यादि अवसरों पर उनके यहाँ खूब नाचरंग और उत्सव हुआ करते थे। उनकी हर एक अदा से रियासत और तबीयतदारी टपकती थी। कंधों तक बाल लटक रहे हैं। आप इधर से उधर टहल रहे हैं। एक छोटा-सा लड़का पान की तश्तरी लिए पीछे-पीछे लगा हुआ है। बात की काँट-छाँट का क्या कहना है ! जो बातें उनके मुँह से निकलती थीं, उनमें एक विलक्षण वक्रता रहती थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से एकदम निराला होता था। नौकरों तक के साथ उनका संवाद सुनने लायक होता था।

उत्तर— संदर्भ- प्रस्तुत गद्यावतरण आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखे गए संस्मरणात्मक निबंध 'प्रेमघन की छाया-स्मृति' से लिया गया है। इसे हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग-- चौधरी बदरीनारायण 'प्रेमघन' जी संपन्न परिवार से थे। उनके रहन-सहन तथा बोलचाल से उनकी रईसी का पता चलता था।

व्याख्या-- उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' जी एक अच्छे-खासे हिन्दुस्तानी रईस थे अत: उनमें वे सब विशेषताएँ होनी स्वाभाविक थीं जो तत्कालीन रईसों (धनी-मानी व्यक्तियों) में पाई जाती थीं। वसंत पंचमी और होली के अवसर पर उनके यहाँ नाच-रंग की महफिलें सजी और पर्याप्त खर्च करके मनोरंजन किया जाता था। उनकी हर भाव-भंगिमा से उनको रईसी आदतें व्यस्त होती थीं। वे तबियत से खर्च करते और लोगों के साथ महफिलों का लुत्फ (आनंद) उठाते थे । उनकी सज-धज भी आकर्षक होती थी। बड़े-बड़े बाल जो कंधों पर लटकते रहते उन्हें अलग पहचान देते थे। जब कभी वे बरामदे में इधर से उधर चहलकदमी कर रहे होते तो एक लड़का पान की तश्तरी लिए उनके पीछे-पीछे चलता। कब बाबू साहब को पान की तलब लगे और वह तश्तरी उनके सामने पेश करे। बातचीत करने में वे बड़े विदग्ध (चतुर) थे और ऐसी बातें करते कि लोग मुग्ध हो जाते। उनकी वचन वक्रता विलक्षण थी। उनकी बातचीत का ढंग उनके लेखों के ढंग से नितांत भिन्न था। नौकरों से भी वे जो बातें करते वे सुनने लायक होती थीं। अगर किसी नौकर से कोई गिलास गिरा तो उनके मुंह से निकलता “कारे बचा त नाहीं" अर्थात् क्यारे फूटने से बचा तो नहीं।

3. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

जो है वह खड़ा है

बिना किसी स्तंभ के

जो नहीं है उसे थामे है

राख और रोशनी के ऊँचे-ऊँचे स्तंभ

आग के स्तंभ

और पानी के स्तंभ

धुएँ के

खुशबू के

आदमी के उठे हुए हाथों के स्तंभ ।

किसी अलक्षित सूर्य को

देता हुआ अर्घ्य

शताब्दियों से इसी तरह

गंगा के जल में

अपनी दूसरी टाँग से

बिलकुल बेखबर!

उत्तर- संदर्भ– प्रस्तुत काव्यांश 'बनारस' कविता से उद्धृत है जिसके रचयिता श्री केदारनाथ सिंह हैं। यह कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में संकलित है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में एक ओर बनारस के प्राचीन भव्य स्वरूप की झाँकी प्रस्तुत की गयी है तो दूसरी ओर बनारस की आधुनिकता का वर्णन है। इसमें बनारस के एक विशिष्ट रूप को प्रस्तुत किया गया है। सदियों से चली आ रही आध्यात्मिकता और सांस्कृतिक वैभव का भी वर्णन है।

व्याख्या- कवि का कहना है कि बनारस में जो कुछ विद्यमान है वह सभी बिना किसी आधार के, बिना किसी सहारे के खड़ा है। बनारस की प्राचीनता, आस्था, आध्यात्मिकता, विश्वास, भक्ति, श्रद्धा और सामूहिक गति सभी विरासत के रूप में यहाँ के जनजीवन में व्याप्त हैं। उसका मिथकीय रूप आज भी सुरक्षित है। जो अस्तित्व में नहीं है उसे राख, रोशनी के ऊँचे खम्भे, आग के स्तम्भ, पानी के खम्भे, धुएँ की सुगन्ध और आदमी के उठे हाथ थामे हुए हैं अर्थात् बनारस में आध्यात्मिकता की दोनों शैलियों के मिले-जुले रूप देखने को मिलते हैं। यह बनारस शहर सदियों से किसी अज्ञात, अदृश्य सूर्य को अर्घ्य देता हुआ गंगा के जल में अपनी एक टाँग पर खड़ा है और दूसरी टाँग से अनजान है। सूर्य को ब्रह्म का प्राचीनतम रूप मानकर सदियों से यहाँ पूजा जा रहा है। यह परम्परा आज की नहीं बहुत प्राचीन है। कहने का तात्पर्य यह है कि आज भी गंगा के बीच में खड़े होकर उसके जल से सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है।

बनारस का एक भाग आज भी प्राचीन परम्परा में दृढ़ है तो दूसरा आधुनिकता से प्रभावित है। इस प्रकार बनारस में प्राचीनता के साथ आधुनिकता का समावेश है।

4. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि,

मूदि रहए दु नयान,

कोकिल-कलरव, मधुकर-धुनि सुनि,

कर देइ झाँपइ कान।।

माधव, सुन-सुन बचन हमारा।

तुअ गुन सुंदरि अति भेल दूबरि

गुनि-गुनि प्रेम तोहारा।।

धरनी धरि धनि कत बेरि बइसइ,

पुनि तहि उठइ न पारा।

कातर दिठि करि, चौदिस हेरि-हेरि

नयन गरए जल-धारा।।

उतर- सन्दर्भ-- प्रस्तुत पंक्तियाँ मैथिल कोकिल विद्यापति द्वारा रचित 'पदावली' से ली गई हैं जिन्हें 'पद' शीर्षक के अन्तर्गत हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग--विरहिणी नायिका की विरह दशा का वर्णन करती हुई कोई सखी नायक श्रीकृष्ण से कहती है कि पुष्पित वन और कोयल की कूक उसे लेशमात्र नहीं सुहाती, वह अत्यन्त दुर्बल हो गई है, पृथ्वी पर बैठ जाये तो उठ भी नहीं पाती। नायिका की इसी विरह विकल दशा का वर्णन विद्यापति ने इस पद में किया है।

व्याख्या-- दूती ने जाकर श्रीकृष्ण से कहा–हे कृष्ण ! तुम्हारे विरह में नायिका राधा अत्यन्त विकल हो रही है। वह कमलमुखी जब पुष्पित उपवनों को देखती है तो दोनों नेत्र बन्द कर लेती है और जब कोयल की मधुर कूक और भौरों का मधुर गुंजार सुनती है तो दोनों हाथों से कान ढक लेती है। उसे यह सब लेशमात्र भी नहीं सुहाता। हे कृष्ण ! मेरी बात को ध्यान से सुनो। तुम्हारे गुणों पर मुग्ध वह विरहिणी राधा तुम्हारे विरह में अत्यन्त दुर्बल हो गयी है और निरन्तर तुम्हारे ही बारे में सोचती रहती है। कितनी ही बार वह पृथ्वी पर बैठ जाती है किन्तु दुर्बलता के कारण अपने आप उठ भी नहीं पाती। तुम्हारे आगमन की प्रतीक्षा करती हुई वह राधा कातर (पैनी) दृष्टि से चारों दिशाओं में देखती रहती है और उसकी आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित होती रहती है। तुम्हारे विरह में उसका शरीर उसी तरह प्रतिक्षण क्षीण होता जा रहा है जैसे चतुर्दशी का चन्द्रमा प्रतिदिन छोटा होता जाता है।
विद्यापति कवि कहते हैं कि.मिथिला के राजा शिवसिंह रानी लक्ष्मणादेवी पर मुग्ध हैं और उनके साथ रमण करते हैं।

5. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

धर्म के रहस्य जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे, जो कहा जाए वही कान ढलकाकर सुन ले, इस सत्ययुगी मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टांत बहुत तालियाँ पिटवाकर दिया जाता है। घड़ी समय बतलाती है। किसी घड़ी देखना जानने वाले से समय पूछ लो और काम चला लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वयं सीख लो किंतु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोलकर देखें, पुर्जे गिन लें, उन्होंने खोलकर फिर जमा दें, साफ करके फिर लगा लें- यह तुमसे नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं। यह तो वेदशास्त्र धर्माचार्यों का ही काम है कि घड़ी के पुर्जे जाने, तुम्हें इससे क्या-क्या इस उपमा से जिज्ञासा बंद हो जाती है?

उत्तर- संदर्भ-- प्रस्तुत पंक्तियाँ पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' जी द्वारा रचित पाठ 'सुमिरिनी के मनके' से ली गई हैं। यह अंश इस पाठ के दूसरे खण्ड 'घड़ी के पुर्ने' से उद्धृत किया गया है जिसे हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग 2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग-- धर्म का उपदेश देने वाले विद्वान घड़ी का उदाहरण देकर धर्म के विषय में बताते हैं। घड़ी में केवल समय देखो। उसको खोलकर मत देखो। धर्म के उपदेश सुनो, उस पर तर्क मत करो।

व्याख्या-- धर्मोपदेशक प्रायः यह कहा करते हैं कि तुम्हें धर्म के बारे में जो कुछ बताया जाए उसे चुपचाप कान खोलकर सुन लो, उस पर कोई टीका-टिप्पणी मत करो, कोई जिज्ञासा न करो क्योंकि तुम्हें धर्म का रहस्य जानने की कोई आवश्यकता नहीं। इस धर्मरूपी घड़ी का उपयोग तुम्हें केवल समय जानने के लिए करना है न कि घड़ी को पीछे से खोलकर उसके पुों को देखने, खोलने, साफ करने या पुनः जोड़ने की जरूरत है। जब धर्मोपदेशक धर्म की तुलना घड़ी से करते हैं तो श्रोता ताली बजाकर उनका समर्थन करते हैं। इस प्रकार तालियाँ पिटवाकर उपदेशक लोगों के मन में धर्म का रहस्य जानने के लिये उठी जिज्ञासा को बेमानी बताकर उसे शांत करना चाहते हैं। किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं। हर व्यक्ति के मन में धर्म का रहस्य जानने की कुछ जिज्ञासा रहती है। साथ ही जो शंकाएँ उसके मन में उठती हैं उनका वह समाधान भी करना चाहता है।

6. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

ये लोग आधुनिक भारत के नए 'शरणार्थी' हैं, जिन्हें औद्योगीकरण के झंझावत ने अपनी घर-जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए निर्वासित कर दिया है। प्रकृति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़ या भूकंप के कारण लोग अपना घरबार छोड़कर कुछ अरसे के लिए जरूर बाहर चले जाते हैं, किन्तु आफत टलते ही वे दोबारा अपने जाने-पहचाने परिवेश में लौट भी आते हैं। किन्तु विकास और

प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगों को उन्मूलित करता है, तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते। आधुनिक औद्योगीकरण की आँधी में सिर्फ मनुष्य . ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते हैं।

उत्तर- संदर्भ –प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्मल वर्मा के यात्रावृत्त 'जहाँ कोई वापसी नहीं' से ली गई हैं। इसे हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग– सामान्यतः व्यक्ति प्राकृतिक विपदाओं के कारण अपना घर-बार छोड़कर कुछ समय के लिए विस्थापित होता है पर आधुनिक भारत में औद्योगीकरण के झंझावात ने तमाम लोगों को विस्थापित होकर सदा के लिए शरणार्थी बनने को विवश कर दिया है।

व्याख्या– प्रायः व्यक्ति को प्राकृतिक विपदाओं भूकम्प, बाढ़ आदि के कारण अपना घरबार छोड़कर थोड़े समय के लिए विस्थापित होकर कहीं अन्यत्र शरण लेनी पड़ती है। जैसे ही प्राकृतिक विपदा शांत हुई वे अपने पुराने घर में, पुराने परिवेश में वापस लौट आते हैं किन्तु औद्योगीकरण के झंझावात (तूफान) से जो विस्थापन लोगों को झेलना पड़ता है वह स्थायी किस्म का होता है जिसमें व्यक्ति को सदा के लिए अपना घर-बार छोड़कर इधर उधर शरण लेनी पड़ती है। औद्योगीकरण के कारण विस्थापित ये आधुनिक भारत के नए शरणार्थी हैं जिन्हें अपनी जमीन से अपने घर से सदा के लिए उखाड़कर निर्वासित कर दिया गया है। प्राकृतिक प्रकोप तो कुछ समय के लिए ही होता है और जैसे ही वह समाप्त होता है, विस्थापित लोग पुनः अपने घर लौट आते हैं। औद्योगीकरण में विकास और प्रगति के नाम पर जो विस्थापित होता है उसमें घर-जमीन से उखड़े लोग सदा के लिए अपना घर छोड़ने को विवश हो जाते हैं और फिर कभी वापस नहीं आ पाते। आधुनिक औद्योगीकरण ने ग्रामीणों को उनके परिवेश से काट दिया है, उनके आवास स्थलों को सदा के लिए नष्ट कर दिया है।

7. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

मैं ने देखा

एक बूंद सहसा

उछली सागर के झाग से;

रंग गई क्षणभर

ढलते सूरज की आग से।

मुझ को दीख गया

सूने विराट के सम्मुख

हर आलोक-छुआ अपनापन

है उन्मोचन

नश्वरता के दाग से!

उत्तर–

सन्दर्भ–'मैं ने देखा, एक बूंद' कविता प्रयोगवाद के जनक एवं ख्याति प्राप्त कवि सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की कृति 'अरी ओ करुणा प्रभामय' से हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में संकलित की गई है।

प्रसंग-- उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में अज्ञेय ने समुद्र से अलग दीखने वाली बूंद की क्षणभंगुरता का वर्णन किया है। **व्याख्या–** कवि कहता है कि बूंद सागर की लहरों के झाग से उछलकर अलग हुई और पुनः उसी में समा गई। संध्याकालीन सूर्य की किरणें अरुणाभ थी । वह बूंद भी उन किरणों का सम्पर्क प्राप्त करके लाल हो गई और झिलमिलाने लगी। वह बूंद क्षणिक थी किन्तु उसकी क्षणभंगुरता निरर्थक नहीं थी। उस बूंद के उछलकर पुनः सागर में विलीन होने के दृश्य को देखकर कवि के मन में एक दार्शनिक भावना जाग्रत होती है कि व्यक्ति बूंद तथा सागर समाज के समान है। जिस प्रकार बूंद-बूंद से सागर बनता है उसी प्रकार व्यक्तियों के समूह से समाज बनता है।

बूँद का सूर्य किरणों से प्रकाशित होकर चमकने और पुनः समुद्र में विलीन होने को देखकर कवि को आत्मबोध होता है कि विराट सत्ता निराकार और अखण्ड है। जीव खण्ड है, कवि को उसमें भी अखण्डता के दर्शन होते हैं। सत्य के दर्शन होते हैं। वह अनुभव करता है कि मानव जीवन के वे क्षण सार्थक हैं जो कर विराट के साथ विलय होने पर व्यतीत होते हैं।

8. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

धर्म के दस लक्षण वह सुना गया, नौ रसों के उदाहरण दे गया। पानी के चार डिग्री के नीचे शीतता में फैल जानें के कारण और उससे मछलियों की प्राणरक्षा को समझा गया, चंद्रग्रहण का वैज्ञानिक समाधान दे.गया, अभाव को पदार्थ मानने न मानने का शास्त्रार्थ कह गया और इग्लैंड के राजा आठवें हेनरी की स्त्रियों के नाम और पेशवाओं का कर्सीनामा सुना गया। यह पूछा गया कि तू क्या करेगा। बालक ने सीखा सिखाया उत्तर दिया कि मैं यावज्जन्म लोकसेवा करूँगा। सभा 'वाह-वाह करती सुन रही थी, पिता का हृदय उल्लास से भर रहा था।

उत्तर–

संदर्भ–- प्रस्तुत पंक्तियाँ 'सुमिरिनी के मनके' नामक पाठ के प्रथम खण्ड 'बालक बच गया' से ली गई हैं। पंडित चंद्रधर शर्मा का यह पाठ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित है।

प्रसंग- एक विद्यालय के वार्षिकोत्सव में प्रधानाचार्य अपने बालक की योग्यता का प्रदर्शन कर रहे थे। उस पढ़ाकू बालक से विभिन्न विषयों के प्रश्न पूछे जा रहे थे और वह उनका रटा-रटाया उत्तर दे रहा था और लोग 'वाह-वाह' कर रहे थे किन्तु वास्तविकता यह थी कि ऐसा करके उसकी-बाल प्रवृत्तियों का दमन किया गया था।

व्याख्या– बालक से वार्षिकोत्सव में तरह-तरह के प्रश्न पूछे जा रहे थे जिनके रटे-रटाए उत्तर वह दे रहा था। इस प्रकार बालक की प्रतिभा का प्रदर्शन कर उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियों को दबाया जा रहा था। बालक से धर्म के दस लक्षण बताने को कहा गया, उसने रटे हुए लक्षण सुना दिए। पूछने पर नौ रसों के नाम उदाहरण सहित बता दिए। विज्ञान और भूगोल से जुड़े प्रश्नों-शीतता, चंद्रग्रहण आदि के कारण भी उसने सही-सही बताये। उसने दर्शनशास्त्र के प्रश्नों के सही उत्तर दिए और यह भी बता दिया कि इंग्लैंड के राजा हेनरी .आठवें की स्त्रियों के क्या नाम थे और पेशवाओं का कुर्सीनामा भी उसने सुना दिया। उससे यह भी पूछा गया कि तू क्या बनना चाहता है। इसका रटा-रटाया जवाब भी उसने दिया कि मैं जीवन-पर्यन्त लोक सेवा करूँगा। उसके उत्तर को सुनकर वहाँ उपस्थित लोग वाह-वाह करते हुए उसकी प्रशंसा कर रहे थे तथा पिता का हृदयं अपने पुत्र के इस प्रतिभा-प्रदर्शन पर उल्लास से भर रहा था।

9. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

अरुण यह मधुमय देश हमारा!

जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।

सरस तामरस गर्भ विभा पर-नाच रही तरुशिखा मनोहर।

छिटका जीवन हरियाली पर-मंगल कुंकुम सारा!

लघु सुरधनु से पंख पसारे-शीतल मलय समीर सहारे।

उड़ते खग जिस ओर मुँह किए-समझ नीड़ निज प्यारा।

बरसाती आँखों के बादल-बनते जहाँ भरे करुणा जल।

लहरें टकराती अनंत की-पाकर जहाँ किनारा।

हेम कुंभ ले उषा सवेरे-भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मदिर ऊँघते रहते जब-जगकर रजनी भर तारा।

उतर– सन्दर्भ– प्रस्तुत गीत छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद की कालजयी नाट्य-कृति 'चन्द्रगुप्त' से लेकर हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग 2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग– 'चन्द्रगुप्त' नाटक के दूसरे अंक में ग्रीक सेनापति सेल्यूकस की पुत्री कार्नेलिया सिन्धु नदी के किनारे ग्रीक-शिविर के पास वृक्ष के नीचे बैठकर यह गीत गाती है। इसमें भारतभूमि की महिमा, गौरव और प्राकृतिक सुषमा का मनोहारी चित्रण है। भारत से प्रभावित कार्नेलिया उसे अपना देश मानती है।

व्याख्या– प्रभातकालीन अरुणिमा से युक्त हमारा यह भारत देश मधुरिम और मनोहारी है। सूर्य की सुनहली किरणों के कारण इसकी प्राकृतिक सुषमा बढ़ जाती है, मधुमय हो जाती है। विश्व के कोने-कोने से ज्ञान-पिपासु यहाँ आकर ज्ञान प्राप्त करते हैं। यह देश जिज्ञासुओं को सहारा देता है। उन्हें यहाँ अवलम्ब का सहज आभास होता है।

कार्नेलिया भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य से प्रभावित होकर भावविभोर हो गीत के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त करते हुए कहती है कि इस देश में प्रात:कालीन सूर्य वृक्षों की फुनगियों की हरियाली पर अपनी लालिमा बिखेरता है। वृक्षों की शाखाओं से छनकर जब सूर्य की किरणें कमलों पर अपनी कान्ति बिखेरती हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो वे पुष्पों पर नृत्य कर रही हों और जीवन की हरियाली पर मांगलिक कुंकुम बिखर गया हो ।

केवल मनुष्य ही नहीं पक्षी भी इस देश से प्रेम करते हैं। इसलिए दूर-दूर के विभिनं पक्षी अपने इन्द्रधनुषी पंखों को पसार कर सुगंधित वायु के सहारे इस देश की ओर ही आते हैं मानो यह देश ही उनका नीड़ (घोंसल) हो। भाव यह है कि विभिन्न देशों की सभ्यता-संस्कृति, भाषा, वेश-भूषा, आचार-विचार वाले व्यक्ति यहाँ आते हैं और आश्रय पाते हैं।

कार्नेलिया भारत के लोगों की विशेषता बताती हुई गीत के माध्यम से कहती है कि यहाँ के निवासी करुणा और सहानुभूति वाले हैं। वे अपने दुःख से ही दुखी नहीं होते अपितु जिव मात्र के दुःख से उनकी आँखें आर्द्र हो जाती हैं। उनकी आँखों से निकले करुणा के आँसू ही मानो वाष्प (भाप) बनकर बादल बन जाते हैं और फिर बरस जाते हैं। यह वह देश है जहाँ सागर से आने वाली लहरें किनारा पाकर शान्त हो जाती हैं अर्थात् दूर देशों से आने वाले व्याकुल प्राणी यहाँ शान्ति का अनुभव करते हैं। यह देश दुखियों को शांति प्रदान करने वाला है।

प्रसाद जी कार्नेलिया के माध्यम से प्रभातकालीन प्राकृतिक सुषमा का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यहाँ की प्रात:कालीन प्रकृति अवर्णनीय है। जब रातभर चमकने वाले तारे मस्ती में ऊँघने लगते हैं तब उषा रूपी सुन्दरी अपने सूर्य रूपी सुनहरे घड़े को आकाशरूपी कुँए में डुबोकर जल लाती है और सुख

बिखेरती जाती है। भाव यह है कि जब सूर्योदय होता है तो तारे छिपने लगते हैं और चारों ओर सुखद अनुभूति होने लगती है।

10. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

हरगोबिन को अचरज हुआ– तो आज भी किसी को संवदिया की जरूरत पड़ सकती है। इस जमाने में जबकि गाँव-गाँव में डाकघर खुल गए हैं, संवदिया के मारफत संवाद क्यों भेजेगा कोई ? आज तो आदमी घर बैठे ही लंका तक खबर भेज सकता है और वहाँ का कुशल संवाद मँगा सकता है, फिर उसकी बुलाहट क्यों हुई? हरगोबिन बड़ी हवेली की टूटी ड्योढ़ी पारकर अंदर गया। सदा की भाँति उसने वातावरण को सूंघकर संवाद का अंदाज लगाया।...निश्चय ही कोई गुप्त समाचार ले जाना है।

उत्तर– संदर्भ-- प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी के सुप्रसिद्ध आंचलिक कहानीकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' की कहानी 'संवदिया' से ली गई हैं जिसे हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग 2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग-- बड़ी हवेली की बहुरिया ने हरगोबिन को बुलाया है। संवाद पहुँचाना है उसे अपनी माँ के पास। हरगोबिन को इस बुलावे पर आश्चर्य हो रहा है कि आज तो डाकघर खुल जाने से चिट्ठी-पत्री की सुविधा है फिर भला उसकी बुलाहट क्यों हुई है ?

व्याख्या– गाँव की बड़ी हवेली में रहने वाली बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को बुलवाया है। उसे अपनी माँ के पास कोई संदेश भिजवाना है। हरगोबिन संवदिया है अर्थात् 'संवाद ले जाने वाला'। आज भी किसी को संवदिया की जरूरत पड़ सकती है–यह जानकर हरगोबिन को अचरज हो रहा था। एक जमाना था जब डाक की समुचित व्यवस्था न थी पर अब तो गाँव-गाँव डाकघर खुल गए हैं अब भला संवदिया की क्या जरूरत। पर बड़ी बहू 'जरूर कोई ऐसा संवाद भिजवाना चाहती हैं जिसे चिट्ठी-पत्री में नहीं लिख सकीं वरना चिट्ठी तो आज विदेशों तक भेजी जा सकती है। आदमी घर बैठे ही लंका तक खबर भेज सकता है और वहाँ से कुशलक्षेम का संवाद मँगा सकता है। पर आज बड़ी बहू ने हरगोबिन संवदिया को बुलाया है तो जरूर कोई खास बात होगी, कोई खास संवाद भिजवाना होगा तभी तो उसको बुलाया है। हरगोबिन संवदिया जब बड़ी हवेली के टूटे हुए दरवाजे पर पहुँचा तो सदैव की भाँति उसने वातावरण को भाँप कर यह अनुमान लगाने का प्रयास किया कि अवश्य ही उसे कोई महत्त्वपूर्ण समाचार पहुँचाने के लिए बुलाया गया है।

11. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

जो है वह सुगबुगाता है

जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ

आदमी दशाश्वमेध पर जाता है

और पाता है घाट का आखिरी पत्थर

कुछ और मुलायम हो गया है

सीढ़ियों पर बैठे बन्दरों की आँखों में

एक अजीब सी नमी है

और एक अजीब सी चमक से भर उठा है

भिखारियों के कटोरों का निचाट खालीपन

उत्तर-- सन्दर्भ–प्रस्तुत पंक्तियाँ 'बनारस' कविता से ली गई हैं, जिसके रचयिता आधुनिक कवि केदारनाथ सिंह हैं। यह कविता हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग -2' में संकलित है।

प्रसंग– इन पंक्तियों में कवि ने बनारस में वसन्तागमन का वर्णन किया है। वसन्त आने पर बनारस में नवीन जागृति, उल्लास और चेतना व्याप्त हो जाती है। पत्थरों तक में नरमी का एहसास होता है।

व्याख्या-- कवि कहता है कि बनारस में वसन्त की हवा चलने से जो अस्तित्व में है उसमें सुगबुगाहर्ट होने लगती है, उसमें जागृति आ जाती है। जो अस्तित्व हीन हैं उनमें भी नवांकुर फूटने लगते हैं। इस प्रकार वसन्त की हवा का सारे वातावरण पर प्रभाव पड़ता है। लोग विगत असफलताओं से निराश नहीं होते बल्कि उनमें नई उमंग और नया संकल्प भर जाता है। नवजीवन का संचार होने लगता है और वातावरण नवीन उत्साह से भर जाता है।

दशाश्वमेध घाट पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा लगता है मानो नदी का स्पर्श करने वाला घाट का अन्तिम पत्थर कुछ और नरम हो गया है, उसकी कठोरता कम हो गई है। यह ऐसा ही है जैसे पाषाण हृदय व्यक्ति का हृदय बदल जाता है, उसके व्यवहार में परिवर्तन आ जाता है। घाट पर बैठे बन्दरों की आँखों में एक विशेष प्रकार की नमी दिखाई देने लगती है। एक अजीब-सी चमक दिखाई देती है। घाट पर बैठे भिखारियों के कटोरे भिक्षा से भर जाते हैं जैसे उनमें वसन्त उतर आया हो। जो दीन-हीन हैं उनमें भी एक उमंग भर जाती

12. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

इन्हीं गाँवों में एक का नाम है–अमझर, आम के पेड़ों से घिरा गाँव-जहाँ आम झरते हैं। किंतु पिछले दो-तीन वर्षों से पेड़ों पर सूनापन है, न कोई फल पकता है, न कुछ नीचे झरता है। कारण पूछने पर पता चला कि जब से सरकारी घोषणा हुई है कि अमरौली प्रोजेक्ट के अंतर्गत नवागाँव के अनेक गाँव उजाड़ दिए जाएँगे, तब से न जाने कैसे आम के पेड़ सूखने लगे। आदमी उजड़ेगा तो पेड़ जीवित रहकर क्या करेंगे?

टिहरी गढ़वाल में पेड़ों को बचाने के लिए आदमी के संघर्ष की कहानियाँ सुनी थीं, किन्तु मनुष्य के विस्थापन के विरोध में पेड़ भी एक साथ मिलकर मूक सत्याग्रह कर सकते हैं, इसका विचित्र अनुभव सिर्फ सिंगरौली में हुआ।

उत्तर– **संदर्भ--** प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्मल वर्मा के यात्रा-वृत्तांत 'धुंध से उठती धुन' नामक संग्रह में संकलित यात्रावृत्त 'जहाँ कोई वापसी नहीं' से ली गई हैं। यह यात्रावृत्त हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित है।

प्रसंग-- निर्मल वर्मा को लोकायन संस्था ने सिंगरौली का जायजा लेने भेजा था। उन्होंने वहाँ जाकर देखा कि औद्योगिक विकास के नाम पर लोगों को बड़े पैमाने पर विस्थापित होना पड़ा था और पर्यावरण का भारी विनाश हुआ था। इसी क्षेत्र के अमझर गाँव के आम के पेड़ों पर फल आने बंद हो गए थे और लोगों के विस्थापन के फलस्वरूप पेड़ भी सूखने लगे थे।

व्याख्या-- सिंगरौली में निर्मल जी नवागाँव क्षेत्र में गए। इस क्षेत्र में छोटे-छोटे 18 गाँव बसे हैं जिनमें एक गाँव का नाम है–अमझर । आम के पेड़ों से घिरे गाँव का यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि यहाँ आम के पेड़ों से आम झरते (टपकते) हैं। किन्तु पिछले दो-तीन वर्षों से किसी पेड़ पर न कोई फल पकता है न नीचे गिरता है। कारण पूछने पर लोगों ने बताया . कि जब से यह सरकारी घोषणा हुई है कि अमरौली प्रोजेक्ट के अंतर्गत नवागाँव क्षेत्र के अनेक गाँव उजाड़ दिए जाएँगे तब से न जाने कैसे आम के पेड़ सूखने लगे। जब आदमी उजड़ेगा तो पेड़ हरे-भरे रहकर क्या करेंगे? इसी कारण आम के पेड़ों पर न तो बौर आता है, न फल लगते हैं। निर्मल जी कहते हैं कि अभी तक मैंने यह सुना था कि उत्तराखण्ड के टिहरी गढ़वाल क्षेत्र के निवासियों ने पेड़ों को कटने से बचाने के लिए 'चिपको आन्दोलन' जैसे कई आन्दोलन चलाकर पेड़ों के लिए संघर्ष किया था पर जब सिंगरौली क्षेत्र के अमझर गाँव में गया तो देखा कि वहाँ आम के पेड़ सूखने लगे थे। वहाँ आदमियों के विस्थापन के विरोध में पेड़ों ने एक साथ मिलकर सत्याग्रह कर दिया था। जब यहाँ से आदमी चले जाएँगे तो पेड़ जीवित रहकर क्या करेंगे? पेड़ों के इस मूक सत्याग्रह का अनुभव निर्मल जी को पहली बार सिंगरौ में ही हुआ।

13. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

बानी जगरानी की उदारता बखानी जाइ ऐसी मति उदित उदार कौन की भई।

देवता प्रसिद्ध सिद्ध रिषिराज तपबृद्ध कहि कहि हारे सब कहि न काहू लई।

भावी भूत बर्तमान जगत बखानत है 'केसोदास' क्यों हू न बखानी काहू पै गई।

पति बनें चारमुख, पूत बर्ने पाँचमुख, नाती बनें षटमुख, तदपि नई नई।। .

उत्तर– सन्दर्भ-- प्रस्तुत पंक्तियाँ आचार्य कवि केशवदास द्वारा रचित महाकाव्य 'रामचन्द्र चन्द्रिका' से ली गई हैं। इस छन्द को हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में 'रामचन्द्र चन्द्रिका' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित किया गया है।

प्रसंग-- 'रामचन्द्र चन्द्रिका' का प्रारम्भ करते समय कवि ने मंगलाचरण के रूप में माता सरस्वती की महिमा और उदारता का बखान किया है। कवि का मानना है कि माँ सरस्वती की महिमा और उदारता का वर्णन ऋषि, मुनि देवता तक नहीं कर सके तो भला मैं कैसे उस उदारता का पूर्ण बखान कर पाऊँगा।

व्याख्या-- कवि केशवदास सरस्वती की वन्दना करते हुए कहते हैं कि संसार में इतनी प्रखर बुद्धि भला किसकी है जो जगत की पूज्य वाग्देवी सरस्वती की उदारता का वर्णन कर सकें। सभी बड़े-बड़े देवता तथा तपोवृद्ध ऋषि भी उनके गुणों की प्रशंसा करते-करते थक गये, पर कोई भी उनके गुणों का पूर्णत: वर्णन न कर सका। यद्यपि उनकी महिमा का वर्णन भूतकाल के लोगों ने अपनी सामर्थ्य भर किया है, वर्तमान के लोग अपनी पूर्ण बुद्धि से कर रहे हैं और भविष्य काल के मनुष्य भी उनकी प्रशंसा करते रहेंगे, परन्तु फिर भी उनके गुणों का पूर्णतः वर्णन न हो सकेगा। केशवदास जी कहते हैं कि संसार के कवियों की तो सामर्थ्य ही क्या है जो उनकी प्रशंसा कर सकें, उनके गुणों के पूर्ण जानकार उनके निकट सम्बन्धी भी उनकी प्रशंसा करने में असमर्थ रहे हैं। उनके पति ब्रह्मा अपने चारमुखों से, पुत्र महादेव जी अपने पाँचमुखों से तथा पौत्र (शिव के पुत्र) षडानन अपने षट मुखों से उनके गुणों की प्रशंसा ने । करते रहे हैं, फिर भी कुछ न कुछ नई विशेषता उनसे कहने को छूट ही गयी है।

14. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

भीड़ लड़के ने दिल्ली में भी देखी थी, बल्कि रोज देखता था। दफ्तर जाती भीड़, खरीद-फरोख्त करती भीड़, तमाशा देखती भीड़, सड़क क्रॉस करती भीड़। लेकिन इस भीड़ का अंदाज निराला था। इस भीड़ में एकसूत्रता थी। न यहाँ जाति का महत्त्व था, न भाषा का, महत्त्व उद्देश्य का था और वह सबका समान

था, जीवन के प्रति कल्याण की कामना। इस भीड़ में दौड़ नहीं थी, अतिक्रमण नहीं था और भी अनोखी बात यह थी कि कोई भी स्नानार्थी किसी सैलानी आनन्द में डुबकी नहीं लगा रहा था बल्कि स्नान से ज्यादा समय ध्यान ले रहा था।

उतर- संदर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ दूसरा देवदास' नामक कहानी से ली गई हैं। इसकी लेखिका कहानीकार ममता कालिया हैं। यह कहानी हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग - 2' में संकलित है।

प्रसंग-- संभव दिल्ली का निवासी था और अपनी नानी के घर हरिद्वार आया था। बैसाखी के स्नान हेतु हर की पौड़ी पर जो भीड़ संभव ने देखी वह अभूतपूर्व थी और दिल्ली में रोज दिखने वाली भीड़ से अलग थी। आध्यात्मिक लक्ष्य लेकर तीर्थ स्थलों पर एकत्र होने वाली भीड़ के चरित्र का लेखक ने इस अवतरण में चित्रण किया है।

व्याख्या-- संभव ने भीड़ तो दिल्ली में भी देखी थी बल्कि रोज ही भीड़-भाड़ से भरी दिल्ली वह देखता था। दफ्तर जाती भीड़, सामान खरीदती-बेचंती भीड़, तमाशा देखती भीड़, सड़क पार करती भीड़ लेकिन उस भीड़ में और हर की पौड़ी हरिद्वार में गंगा स्नान के लिए बैसाखी के मेले में एकत्र भीड़ में बहुत अन्तर था। इस भीड़ का अंदाज निराला था और इसमें समाए हर व्यक्ति के उद्देश्य में समानता थी। मेले में एकत्र भीड़ विभिन्न वर्गों की थी। उनमें भाषा, धर्म, जाति का अन्तर था पर वे अन्तर यहाँ गौण हो गए थे, उद्देश्य की एकरूपता स्नान करके पुण्य लाभ कमाना–प्रमुख हो गई थी। सबके हृदय में जीवन की कल्याण कामना प्रमुख थी। दिल्ली की भीड़ दौड़ती-सी लगती, एक-दूसरे को पीछे धकिया कर स्वयं आगे निकलने की चाह वहाँ भीड़ के हर व्यक्ति के मन में रहती थी पर यहाँ एकत्र भीड़ में यह प्रवृत्ति रंचमात्र भी नहीं थी। सब लोग स्नान-ध्यान में व्यस्त थे। स्नान से भी ज्यादा वक्त ध्यान में लगाकर भीड़ के लोग अपने जीवन में कल्याण की कामना कर रहे थे।

15. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

भूपति मरन पेम पनु राखी । जननी कुमति जगतु सबु साखी।। .

देखि न जाहिं बिकल महतारी । जरहिं दुसह जर पुर नर नारी ।।

महीं सकल अनरथ कर मूला । सो सुनि समुझि सहिउँ सब सूला।।

सुनि बन गवनु कीन्ह रघुनाथा । करि मुनि बेष लखन सिय साथा।।

बिन पानहिन्ह पयादेहि पाएँ । संकरु साखि रहेउँ ऐहि घाएँ।।

बहुरि निहारि निषाद सनेहू । कुंलिस कठिन उर भयउ न बेहू।।

अब सबु आँखिन्ह देखेउँ आई । जिअत जीव जड़ सबइ सहाई।।

जिन्हहि निरखि मग साँपिनि बीछी । तजहिं बिषम बिषु तामस तीछी।।

' तेइ रघुनंदनु लखनु सिय अनहित लागे जाहि।

तासु तनय तजि दुसह दुख दैउ सहावइ काहि।।

उत्तर– सन्दर्भ-- प्रस्तुत पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' के 'अयोध्याकाण्ड' से ली गई हैं जिन्हें हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में 'भरत-राम का प्रेम' शीर्षक से संकलित किया गया है।

प्रसंग-भरत जी राम को अयोध्या लौटा लाने के लिए चित्रकूट गए हैं। चित्रकूट में आयोजित सभा में वे अपने मनोभाव व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या-भरत कहते हैं राजा दशरथ ने तो राम के प्रति अपने प्रेम-प्रण का निर्वाह करते हुए राम के वन-गमन करते ही प्राण त्याग दिए। दशरथ मरण और माता कैकेयी की दुर्बुद्धि का साक्षी (गवाह) तो सारा संसार है। राम, लक्ष्मण और सीता के वियोग में माताओं की जो दीन दशा हो गयी है वह देखी नहीं जाती। इनके वियोग की असहनीय ज्वाला में अयोध्या के समस्त नर-नारी भी व्याकुल हैं। इस सारे अनर्थ की जड़ मैं हूँ क्योंकि मुझे राजा बनाने के लिए ही तो माता कैकेयी ने यह सारा छल-प्रपंच किया। जब इस बारे में सोचता हूँ तो असहनीय पीड़ा से हृदय फटता-सा प्रतीत होता है पर क्या करूँ, इसे सहन करना ही पड़ता है।

यह सुनकर कि राम ने लक्ष्मण और सीता को साथ लेकर मनिवेश धारण कर वनगमन किया है और वे बिना पदत्राण (जूतों) के पैदल ही गए हैं, मेरा कठोर हृदय नहीं फटा किन्तु उसमें भयंकर घाव (पीड़ा, कष्ट) हो गया है। शंकर को साक्षी रखकर कह रहा हूँ कि मैं उस कष्ट को बड़ी कठिनाई से सहन कर पा रहा हूँ। फिर निषादराज के स्नेह को देखकर और भी मन में लज्जित हो रहा हूँ कि जो पराए हैं वे तो राम से इतना स्नेह करते हैं और जो अपने हैं वे राम जैसे साधु पुरुष के दुःख का कारण बने। मेरा हृदय निश्चय ही वज्र का बना है और शायद इतना कठोर है कि वह राम को इस वेश में देखकर भी विदीर्ण नहीं हुआ। सब कुछ मुझे अपनी आँखों से देखना पड़ रहा है। क्या करूँ विधाता जीव को (प्राणी को) हर स्थिति में जीवित रखता है।

वे जो इतने सरल, स्नेही हैं कि उन्हें देखकर रास्ते के साँप-बिच्छू तक अपना विष त्याग देते हैं और तामसी प्रवृत्ति वाले भी अपने तीव्र क्रोध को छोड़ देते हैं, ऐसे राम, लक्ष्मण और सीता जिसे अपने शत्रु लगे हों ऐसी कैकेयी के पुत्र होने का अपार दुःख मुझे सहन करना पड़ रहा है। भला मुझे छोड़कर ऐसा दुःख विधाता और किसी को क्यों सहन कराएगा।

16. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

दूसरे की मुद्रा की झनझनाहट गरीब आदमी के हृदय में उत्तेजना उत्पन्न करती है। उसी का आश्रय लिया। मैंने अपने जेब में पड़े हुए रुपयों को ठनठनाया। मैं ऐसी जगहों में नोट-वोट लेकर नहीं जाता, केवल ठनठनाता। उसकी बात ही और होती है। मैंने कहा, "ठीकै तो कहत हौ बुढ़िया। ई दुई रुपया लेओ। तुम्हार नुकसानौ पूर होए जाई। ई हियाँ पड़े अंडसै करिहैं। न डेहरी लायक न बँडेरी लायक।" बुढ़िया को बात समझ में आ गई और जब रुपया हाथ में आ गया तो बोली, "भइया ! हम मने नाही करित तुम लै जाव।"

उत्तर--- संदर्भ-- प्रस्तुत पंक्तियाँ ब्रजमोहन व्यास के आत्मकथा-अंश 'कच्चा चिट्ठा' नामक पाठ से ली गई हैं। यह पाठ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा-भाग-2' में संकलित है।

प्रसंग–इस अवतरण में लेखक ने यह बताया है कि उन्हें बोधिसत्व की कुषाणकालीन मूर्ति किस तरह दो रुपयों में प्राप्त हुई। एक बुढ़िया के खेत पर पड़ी आठ फुट की वह प्राचीन मूर्ति पुरातात्विक दृष्टि से बेशकीमती थी। बुढ़िया उस पर अपना हक जता रही थी तब व्यास जी ने जेब में पड़े रुपयों को खनकाते हुए बुढ़िया को दो रुपए देकर संतुष्ट किया और मूर्ति अपने संग्रहालय के लिए ले ली।

व्याख्या– संस्कृत में एक कहावत है 'उद्वेजयति दरिद्रं परमुद्रायाः झणत्कारम्।' अर्थात् दूसरे की मुद्रा की झनझनाहट गरीब आदमी के हृदय में उत्तेजना पैदा करती है। व्यास जी ने जब खेत की मेड़ पर पड़ी आठ फुट लम्बी बोधिसत्व की उस प्रतिमा को उठवाने का उपक्रम किया तो खेत की मालकिन बुढ़िया ने यह कहते हुए एतराज किया कि यह मूर्ति मेरी है और मैं इसे नहीं दूंगी। यह मेरे खेत से निकली है। दो दिन तक हमारा हल रुका रहा तब हम इसे निकलवा पाए हैं। हमारा नुकसान कौन भरेगा। तब व्यास जी ने जेब में पड़े सिक्कों (रुपयों) को खनखनाकर बुढ़िया के मन में लालच और उत्तेजना उत्पन्न कर दी और उसे दो रुपये देकर कहा–तुम ठीक कहती हो। ये दो रुपये लो। इससे तुम्हारा नुकसान भी पूरा हो जाएगा और ये मूर्ति यहाँ पड़े-पड़े जो रुकावट पैदा कर रही है वह भी दूर हो जाएगी। साथ ही ये तुम्हारे किसी काम की भी नहीं है न तो देहरी (के स्थान) पर इन्हें लगा सकती हो, न छप्पर में बैंडेरी (मोटा खम्भा) के रूप में ये लग सकेगी। बुढ़िया तुरंत मान गई और कहने लगी मैं मना नहीं करती आप इसे ले जाएँ। इस तरह दो रुपए में वह बेशकीमती बोधिसत्व की मूर्ति प्रयाग संग्रहालय हेतु व्यास जी ने प्राप्त कर ली।

17. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

सिंधु तर्यो उनको बनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।

बाँधोई बाँधत सो न बन्यो उन बारिधि बाँधिकै बाट करी।

श्रीरघुनाथ-प्रताप की बात तुम्हें दसकंठ न. जानि परी।

तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराइ-जरी।।

उत्तर-- **सन्दर्भ–**प्रस्तुत छन्द केशवदास द्वारा रचित 'रामचन्द्र चन्द्रिका' के 'अंगद-रावण संवाद' से लिया गया है। इसे हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में 'रामचंद्रचंद्रिका' शीर्षक से संकलित किया गया है।

प्रसंग-- अंगद जब रावण की सभा में पंहुचा तो रावण ने उससे पूछा कि तू कौन है? अंगद ने अपना परिचय राम के दूत के रूप में दिया तब रावण कहने लगा कि ये राम कौन है? उनका प्रताप क्या है? रावण के ऐसा कहने पर अंगद समझ गया कि यह राम को निचा दिखाने के लिए ऐसा कह रहा है अत: उसी की भाषा में उत्तर देते हुए अंगद ने जो कहाँ उसका वर्णन इस छन्द में कवि ने किया है ।

व्याख्या- अंगद रावण से कहने लगा । तु राम के आगे कहीं नहीं ठहरता। कहाँ राम और कहाँ तू? देख, उनका तो छोटा-सा वानर(हनुमान) इतने बड़े समुद्र को लांघकर लंका में आ धमका और तुम धनुष की उस रेखा को भी नहीं लांघ पाए जो लक्ष्मण जी ने सीता की कुटी के चारों ओर खींच दी थी। अब तू ही बता तेरी और उनकी क्या बराबरी?

तुम लोगों ने अपनी पूरी शक्ति लगाकर उनके वानर हनुमान को बाँधने का प्रयास किया, पर उसे बाँध नहीं पाए और उन्होंने समुद्र पर पुल बाँधकर अपनी सेना के लिए रास्ता बना दिया। अब भी तुम्हें श्री राम के प्रताप का बोध नहीं हुआ ? अरे रावण तुम तो दसकंठ कहे जाते हो, तुम्हारे अन्दर तो ज्यादा बुद्धि होनी चाहिए थी पर तुम दस सिरों वाले होकर भी मूर्ख रहे जो मुझसे श्री राम के प्रताप के बारे में पूछ रहे हो। हनुमान की पूँछ को तेल और रुई लगाकर तुम लोगों ने जलाने का पूरा प्रयास किया पर उसे नहीं जला पाए। हाँ, इस प्रयास में तुम्हारी हीरे-मोती से जड़ी सोने की लंका अवश्य जल गई। हे रावण! यह राम का ही तो प्रताप है और तुम मुझसे पूछ रहे हो कि राम का प्रताप क्या है क्या अब भी तुम्हें राम का प्रताप समझ में नहीं आया।

18. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

जिस गाँव में भद्रमथ का शिलालेख हो सकता है वहाँ संभव है और भी शिलालेख हों। अतः मैं हजियापुर जो कौशाम्बी से केवल चार-पाँच मील था, गया और मैंने गुलजार मियाँ के यहाँ डेरा डाल दिया। उसके भाई को, जो म्युनिसिपैलिटी में नौकर था, साथ ले लिया था। गुलजार मियाँ के मकान के ठीक सामने उन्हीं का एक निहायत पुख्ता सजीला कुँआ था। चबूतरे के ऊपर चार पक्के खम्भे थे

जिनमें एक से दूसरे तक अठपहल पत्थर की बैंडेर पानी भरने के लिये गड़ी हुई थी। सहसा मेरी दृष्टि एक बँडेर पर गई जिसके एक सिरे से दूसरे सिरे तक ब्राह्मी अक्षरों में एक लेख था।

उत्तर— संदर्भ-- प्रस्तुत पंक्तियाँ ब्रजमोहन व्यास जी की आत्मकथा के अंश 'कच्चा चिट्ठा' से ली गई हैं। यह पाठ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित है।

प्रसंग–हजियापुर गाँव में भद्रमथ का शिलालेख मिला, यह जानकर व्यास जी ने सोचा कि यहाँ और भी शिलालेख मिल सकते हैं। यह सोचकर उन्होंने गाँव में गुलजार मियाँ के घर डेरा डाल दिया। उनके कुँए की एक बँडेर ब्राह्मी अक्षरों से लिखी मिली जिसे उन्होंने अपने संग्रहालय के लिए निकलवा लिया।

व्याख्या-- लेखक कहता है कि जब हजियापुर में भद्रमथ का शिलालेख मिला तभी उनको लगा कि यहाँ पुरातात्विक महत्त्व के और भी शिलालेख हो सकते हैं। उनकी खोज में लेखक ने हजियापुर गाँव में जो कौशाम्बी से चार-पाँच मील की दूरी पर है, गुलजार मियाँ के यहाँ डेरा डाल दिया। उसके साथ गुलजार मियाँ का छोटा भाई था जो इलाहाबाद नगरपालिका में नौकर था। गुलजार मियाँ के घर के ठीक सामने एक पुराना पक्का कुँआ था जिस पर चार खम्भे थे और चारों खम्भों को आपस में बँडेरों से जोड़ा गया था। इनमें से एक बँडेर पर व्यास जी (लेखक) को ब्राह्मी अक्षरों में उनके एक सिरे से दूसरे सिरे तक कुछ लिखा हुआ दिखा। यह देखकर उनकी तबियत फड़क उठी और गुलजार मियाँ ने वह बँडेर संग्रहालय के लिये तुरंत निकलवा दी। पुरातात्विक महत्त्व के उस शिलालेख (बँडेर, जिस पर लेख अंकित था) को संग्रहालय के लिए पाकर व्यास जी को लगा कि भद्रमथ का जो शिलालेख उन्हें नहीं मिल पाया था, उसकी क्षतिपूर्ति हो गई और यहाँ आना सार्थक हो गया।

19. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी।

निघटी रुचि मीचु घटी हूँ घटी जंगजीव जतीन की छूटी तटी।

अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरुज्ञान-गटी।

चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी वन पंचबटी।।

उत्तर– सन्दर्भ-- प्रस्तुत छन्द केशवदास द्वारा रचित 'रामचन्द्र चन्द्रिका' से लिया गया है जिसे हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में संकलित किया गया है। प्रसंग इस छन्द में कवि ने पंचवटी की महिमा का वर्णन चमत्कारपूर्ण ढंग से किया है। लक्ष्मण जी पंचवटी. की शोभा का वर्णन करते हुए

उसे गुणों में भगवान शंकर ने समान मुक्तिदायिनी बता रहे हैं। यहाँ मुक्तिरूपी नर्तकी सर्वत्र नृत्य करती दिखाई देती है।

व्याख्या-- लक्ष्मण जी कहने लगे कि यह पंचवटी नाम का वन शिवजी के समान गुणों वाला है। जिस प्रकार शिवजी के दर्शनों से दुःख समाप्त हो जाता है, उसी प्रकार इस पंचवटी वन में आकर दुःखरूपी चादर पूर्णरूप से फटी जा रही है। तात्पर्य यह है कि सभी दुःख नष्ट हुए जा रहे हैं। कपटी लोग यहाँ एक घड़ी भी नहीं रह सकते। यहाँ आकर लोगों की इच्छाएँ समाप्त हो जाती हैं तथा मृत्यु की घड़ी समाप्त हो जाती है अर्थात मुक्ति मिल जाती है। यहाँ आकर संसार के जीवों और योगियों की समाधि छूट जाती है। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य इतना मनमोहक है कि सभी लोग यहाँ आकर पंचवटी की शोभा देखने लगते हैं। यहाँ आकर पापों के समूह की विकट बेड़ी कट जाती है तथा श्रेष्ठ ज्ञानरूपी गठरी समीप ही प्रकट हो जाती है। भाव यह है कि पंचवटी में रहने वाले ऋषि-मुनियों की संगति से, उनके प्रवचनो को सुनकर पाप समूह नष्ट हो जाता है और व्यक्ति को सहज में ही ज्ञान उपलब्ध हो जाता है। इसके चारों ओर मुक्तिरूपी नर्तकी नाचती है। शिवजी के चारों ओर भी मुक्ति नाचती

रहती है।

20. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

मैं तो केवल निमित्तमात्र था। अरुण के पीछे सूर्य था। मैंने पुत्र को जन्म दिया, उसका लालन-पालन किया, बड़ा हो जाने पर उसके रहने के लिए विशाल भवन बनवा दिया, उसमें उसका गृह-प्रवेश करा दिया, उसके संरक्षण एवं परिवर्धन के लिए एक सुयोग्य अभिभावक डॉ. सतीश चंद्र काला को नियुक्त कर दिया और फिर मैंने संन्यास ले लिया।

उतर-- **संदर्भ--** प्रस्तुत पंक्तियाँ 'कच्चा चिट्ठा' नामक पाठ से ली गई हैं जो ब्रजमोहन व्यास की आत्मकथा का एक अंश है। यह पाठ हमारी पाठ्य पुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित है।

प्रसंग-- व्यास जी प्रयाग संग्रहालय के संस्थापक थे। उसके संरक्षण एवं परिवर्द्धन का उत्तरदायित्वं एक सुयोग्य व्यक्ति को सौंपकर संन्यास ले लिया। अवतरण के इस भाग में इसी वृत्तांत का उल्लेख है।

व्याख्या-- व्यास जी प्रयाग संग्रहालय के संस्थापक थे पर उन्होंने अत्यंत विनम्रतापूर्वक ो स्वयं को इसका श्रेय न देते हुए निमित्तमात्र घोषित किया है। स्वयं को कर्त्ता न मानकर केवल 'कारण' (साधन) मात्र बताना उनकी विनम्रता ही है अन्यथा 'प्रयाग संग्रहालय' की कल्पना भी उनके बिना नहीं की जा सकती थी। आकाश में अरुणोदय होते ही अंधकार छंट जाता है पर वास्तविकता यह है कि अरुण (सारथी) को अपने पीछे 'सूर्य' का बल - प्राप्त है। व्यास जी यह कहना चाहते हैं कि उन्होंने जो कुछ

किया उसके पीछे परमात्मा की इच्छा थी अर्थात् परमात्मा की कृपा से इतना बड़ा काम सफल हो सका। जैसे हम बच्चे को जन्म देकर उसका लालन-पालन करते हैं, जब वह बड़ा हो जाता है, तब उसके लिए भवन बनवाकर गृह प्रवेश करा देते हैं, ठीक इसी प्रकार व्यास जी ने प्रयाग संग्रहालय को जन्म दिया, उसका संरक्षण-परिवर्द्धन किया । और उसके लिए एक विशाल भवन बनवा दिया। यही नहीं अपितु उस भवन में उसका प्रवेश भी करा दिया अर्थात् संग्रहालय की समस्त सामग्री नवीन भवन में प्रदर्शित-संरक्षित कर दी और डॉ. सतीश चंद्र काला को उसका संरक्षक नियुक्त कर दिया। इस संग्रहालय के नी संरक्षण-परिवर्द्धन की जिम्मेदारी सुयोग्य हाथों में सौंपकर उन्होंने संन्यास ले लिया अर्थात् वे अपने कार्य से विरत हो गए।'

21. निम्नलिखित पठित काव्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

राघौ! एक बार फिरि आवौ।

ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहिं सिधावौ।।

जे पय प्याइ पोखि कर-पंकज वार वार चुचुकारे।

क्यों जीवहिं, मेरे राम लाडिले! ते अब निपट बिसारे।।

भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।

तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे।।

सुनहु पथिक! जो राम मिलहिं बन कहियो मातु संदेसो।

तुलसी मोहिं और सबहिन तें इन्हको बड़ो अंदेसो।।

उत्तर— सन्दर्भ-- प्रस्तुत पंक्तियाँ गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'गीतावली' से ली गई हैं जिन्हें हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अन्तरा भाग-2' में 'पद' शीर्षक से संकलित किया गया है।

प्रसंग— राम के वनगमन के कारण उनके द्वारा पाले-पोसे गए घोड़े अत्यन्त व्याकुल हैं। माता कौशल्या पथिक के माध्यम से राम को यह सन्देश भिजवा रही हैं कि उन्हें अपने घोड़ों को इस तरह विस्मृत नहीं कर देना चाहिए।

व्याख्या- माता कौशल्या किसी पथिक को सन्देश देती हुई कहती हैं कि हे पथिक! यदि तुम्हें वन में कहीं राम मिल जाएँ तो उनसे मेरा यह सन्देश अवश्य कह देना कि तुम्हारे पाले-पोसे घोड़े तुम्हारे वियोग में अत्यन्त व्याकुल हैं। इसलिए हे राघव (राम) कम से कम एक बार तो वन से आकर इन्हें

देख लो। हे राम! अपने इन श्रेष्ठ घोड़ों को, जिन्हें तुमने पाला- पोसा है, देखकर फिर वन में वापस चले जाना। तुमने जिन घोड़ों को दूध पिलाकर और अपने कमल जैसे हाथ इनके बदन पर फिराकर बार-बार प्रेम से पुचकारा था, वे तुम्हारे वियोग में भला कैसे रह सकेंगे ? हे लाड़ले पुत्र राम! क्या तुमने अपने उन घोड़ों को पूरी तरह विस्मृत कर दिया? यद्यपि तुम्हारे न होने से भरत उन घोड़ों की सौगुनी अधिक देखभाल करते हैं, क्योंकि वे तुम्हारे प्रिय घोड़े हैं तथापि तुम्हारे बिना वे घोड़े इस प्रकार दिनों-दिन दुर्बल होते जा रहे हैं जैसे पाला पड़ने से कमल दिनों-दिन मुरझाता जाता है। हे.पथिक! तुम राम से जाकर मेरा यह सन्देश अवश्य कह देना। तुलसीदास जी कहते हैं कि माता कौशल्या ने कहा कि मुझे सबसे अधिक इन घोड़ों की चिन्ता है कि ये तुम्हारे वियोग में भला कैसे जीवित रहेंगे ?

22. निम्नलिखित पठित गद्यांशों में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए--

फिर मुझे एक लोमड़ी मिली। मैंने उससे पूछा, "तुम शेर के मुँह में क्यों जा रही हो?" उसने कहा, "शेर के मुँह के अंदर रोजगार का दफ्तर है। मैं वहाँ दरख्वास्त दूंगी, फिर मुझे नौकरी मिल जाएगी।" मैंने पूछा, "तुम्हें किसने बताया।" उसने कहा, "शेर ने" और वह शेर के मुँह के अंदर चली गई। फिर एक उल्लू आता हुआ दिखाई दिया। मैंने उल्लू से वही सवाल किया। उल्लू ने कहा, "शेर के मुँह के अंदर स्वर्ग है।" मैंने कहा, "नहीं, यह कैसे हो सकता है।" उल्लू बोला, "नहीं, यह सच है और यही निर्वाण का एकमात्र रास्ता है।" और उल्लू भी शेर के मुँह में चला गया।

उत्तर-- संदर्भ-- प्रस्तुत गद्यावतरण असगर वजाहत द्वारा रचित 'लघु कथाएँ' पाठ की 'शेर' नामक लघु कथा से लिया गया है। यह पाठ हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अंतरा भाग-2' में संकलित

प्रसंग-- लेखक ने जंगल में जब बरगद के पेड़ के नीचे मुँह खोलकर बैठे शेर को देखा तो डरकर झाड़ियों की ओट में छिप गया। उसने देखा कि जानवर स्वेच्छा से पंक्तिबद्ध होकर शेर के खुले मुख में घुसते जा रहे थे। जब लेखक ने इन जानवरों से पूछा कि आप लोग शेर के मुँह में क्यों जा रहे हैं तब उन्होंने जो कारण बताया उसी का उल्लेख इस अवतरण में है।

व्याख्या--लेखक ने देखा कि लोमड़ी जैसा चालाक जानवर भी शेर के खुले मुख में प्रवेश कर रहा है। उसने जब लोमड़ी से इसका कारण पूछ तो लोमड़ी ने बताया कि शेर के मुख में रोजगार दफ्तर है और वहाँ जाने पर मुझे नौकरी मिल जाएगी, ऐसा उसे शेर ने ही बताया है। इसी प्रकार जब उल्लू (मूर्ख का प्रतीक) से पूछा कि तुम शेर के मुख में क्यों जा रहे हो तो उसने कहा कि शेर के मुख में स्वर्ग है, वहाँ जाने पर मुझे जन्म और मृत्यु से मुक्ति प्राप्त हो जाएगी और मेरा कल्याण होगा। जब लेखक ने कहा कि शेर के मुख में भला स्वर्ग कैसे हो सकता है तो उल्लू कहने लगा कि यह सच है और निर्वाण का यही एकमात्र रास्ता है। यह कहते हुए वह शेर के मुख में चला गया। लेखक यह

कहना चाहता है कि शेर सब जानवरों को झांसा देकर अपना शिकार बनाता है। उसका प्रचार तंत्र मजबूत है परिणामतः मूर्ख और चतुर सब उसके झांसे में आकर उसको झूठ बातों पर विश्वास कर लेते हैं।